Peer Reviewed
ISSN (P) : 2321-290X (E) 2349-980X
RNI No. : UPBIL/2013/55327

Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Peer Reviewed / Refereed Journal

VOL-6* ISSUE-2* October- 2018

Indexed with Google scholar

Impact Factor
SJIF = 5.689
GIF = 0.543
IIJIF = 6.038

UGC S.NO. 40880
Shrinkhla UGC approved listed

The Research Series

द्विभाषीय - मासिक

Shrinkhala

शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-2* October- 2018
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

19	प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत शिक्षिकाओं के आकाँक्षा स्तर पर वैवाहिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन काशी नरेश सिंह एवं भावना सोनेजी, जबलपुर, म.प्र.	116-118
20	जनपद बागेश्वर में कृषि का विकास एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों में कृषकों की उदासीनता मोहन लाल एवं भरत कुमार, नैनीताल	119-123
21	पर्यावरण और हमारे पूर्वज दिनेश कुमार चारण, चूरू, राजस्थान	124-126
22	डा. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक चिंतन राजश्री सेठी, भीलवाड़ा, राजस्थान	127-131
23	परिवर्तन एवं विकास का मिथक : कल्याणकारी योजनाओं और पंचायतीराज के बावजूद (बाजपुर विकासखण्ड की बुक्सा जनजातीय महिलाओं के सन्दर्भ में) हेम चन्द्र एवं रेनू प्रकाश, नैनीताल	132-146
24	समाज की उत्पत्ति के सिद्धान्तों की दार्शनिक विवेचना पिताम्बर दास जाटव, वाराणसी	147-154
25	विभिन्न वैयाकरणों के मत में लिघर्थ लकार कृष्ण राम, लाडवा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	155-160
26	भारत में वस्तु एवं सेवा कर : एक अवलोकन अरूण सिंह, अलवर, राजस्थान	161-168
27	जनजातीय क्षेत्रों में नक्सलवाद का फैलता दायरा नीतू चौधरी, टोंक, राजस्थान	169-176

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-2* October-2018
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

पर्यावरण और हमारे पूर्वज

दिनेश कुमार चरण
प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राज. लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

सारांश

पर्यावरण परिवर्तन समूचे विश्व के लिए एक शीर्ष चिन्तनीय विषय है। यह संकट सम्पूर्ण पृथ्वी पर समान है फिर व्यक्ति और राज्य निद्रा में है। विकसित राष्ट्र और अधिक विकास करना चाहते है ताकि दुनिया में इनकी श्रेष्ठता कायम रहे, वहीं विकासशील राष्ट्र विकसित होना चाह रहे है। यही हाल उद्योगों और इन्सानों का है। परिणामों से परिचित है फिर भी सब स्वार्थपूर्ति में व्यस्त है। संसाधनों का दोहन इतना अधिक हो रहा है कि सर्वसुलभ समझे जाने वाले शुद्ध हवा और जल भी दुर्लभ हो गए है। यदि भारत की बात करे तो यह सब सत्यानाश तबसे शुरू हुआ जबसे हमने हमारे पूर्वजों की परम्परागत जीवन शैली को छोड़कर आधुनिक जीवन शैली को अपनाया है। मितव्ययता को कंजूसी एवं पिछड़ेपन का प्रतीक मानकर उपहास उड़ाया गया जबकि वह एक ऐसा सद्गुण था जिससे पर्यावरण समृद्ध था।

मुख्य शब्द : पर्यावरण, पूर्वज, प्रदूषण, पेट्रोलियम, परम्परागत मितव्ययता।

प्रस्तावना

समंदर, मरूस्थल में बदल गये, मरूस्थल समतल हो गये और समतल पहाड़! प्रकृति का फेर और मौसम का बदलता मिजाज! फिर भी करोड़ों वर्षों से कायम है सृष्टि...! जीवन को न अकाल निगल सका और न ही जल डुबो सका। मनुष्य की प्रकृति को जीत लेने की जिद से पीड़ित प्रकृति स्वयं को दुरस्त करने की अपनी प्रतिरोधक क्षमता खो चुकी है। प्रकृति का अन्धाधुंध दोहन, वनों की अविवेकपूर्ण कटाई, बड़ी–बड़ी परियोजनाएँ, ओद्यौगिक इकाईयां, असीमित खनन, डीजल–पेट्रोल–कोयला तथा अन्य पेट्रोलियम पदार्थो के अन्तहीन दोहन से पर्यावरण निरन्तर प्रदूषित हो रहा है। धरती तप रही है.।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र के लेखन में अनेक पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया। आंकड़ों के लिए आईपीसीसी, अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी एवं केन्द्रीय भूजल आयोग की रिपोर्ट्स महत्वपूर्ण रही। सन् 2017 में जोधपुर से प्रकाशित महेन्द्र सिंह राठी की पुस्तक 'पर्यावरण प्रेमी खम्भूराम विश्नोई' से राजस्थान के विश्नोई मत के पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण की जानकारी मिलती है। ''राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'' नामक पुस्तक में ईद मोहम्मद ने विश्नोई मत के जनक जम्भोजी की पर्यावरण चेतना का उल्लेख किया है। वही अंशुमान द्विवेदी ने 'हड़प्पा संस्कृति एवं सभ्यता' में आज से 5000 वर्ष पूर्व सिन्धु सभ्यता के निवासियों के पर्यावरण दर्शन की प्रशंसा की है। शोध पत्र में वेदों, महाभारत एवं गीता के प्रसिद्ध वाक्यों को सम्मिलित किया है। प्रो. राजबली पाण्डेय व भगवती प्रसाद पांथरी से हमें मौर्य शासकों द्वारा निर्मित झील एवं पेड़ लगाने जैसे महत्वपूर्ण कार्य देखने को मिलते है। सन् 2016 में प्रो. सतीशचन्द्र की पुनमुद्रित पुस्तक 'मध्यकालीन भारत' से हमें मध्यकालीन शासकों के पर्यावरण प्रेम की जानकारी मिलती है।

विषय विस्तार

पर्यावरण प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग के दुष्परिणाम दुनियां में हर जगह दिखाई दे रहे हैं। मानव सभ्यता निरन्तर पतन की ओर अग्रसर है। खतरों की घण्टिया बजनी प्रारम्भ हो गई हैं, जिन्हें जानबूझकर अनसुना किया जा रहा है। आईपीसीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार समस्त विश्व के पास ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लिए मात्र दस वर्ष का समय और है। अन्यथा समस्त विश्व इसके परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहे। विश्व जल संसाधन एजेन्सीज के मुताबिक वर्तमान समय में 1.1 अरब जनसंख्या भयंकर जल संकट के दौर से गुजर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि विश्व में प्रति वर्ष 50 लाख से अधिक लोग दूषित पेयजल के कारण दम तोड़ रहे हैं। यह संख्या युद्धों व हमलों में मरने वालों की अपेक्षा 10 गुणा अधिक है।

हमारे देश में 300 जिलों में भू–जल स्तर की स्थिति चिन्तनीय है। कुओं में 200 फुट पर भी जल उपलब्ध नहीं है, जो कभी 15 फुट पर था। केन्द्रीय भूजल की रिपोर्ट में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आन्ध्रप्रदेश तेलंगाना, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में भूजल की स्थिति को सर्वाधिक गंभीर चिन्हित किया गया है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर और केरल में भी स्थितियां अप्रिय है। राजस्थान के 27 जिलों में भयंकर जल समस्या है। देश की संसद के अनुसार देश की 275 नदियों में पानी तेजी से खत्म हो रहा है। गतवर्ष देश के नौ राज्यों के 33 करोड़ लोगों ने भीषण जल संकट झेला था। इन सब परिस्थितियों के लिए तीव्र विकास जिम्मेदार है। पूंजीपतियों व उद्योगपतियों को मुनाफा चाहिए, सरकारों को राजस्व तथा उपभोक्ता को सुविधा..! पूरी दुनियां इस चक्रव्यूह में फंसी है।

यदि हमारे पूर्वज भी हमारी तरह स्वार्थी होते तो शायद यह सृष्टि बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी होती परन्तु वे बहुत ही समझदार और दूरदर्शी थे। इतिहास में दर्ज है उनका पर्यावरण दर्शन।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के लोग विभिन्न जीवों, पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों व नदियों की पूजा करते थे।[1] ऋग्वेद में प्राकृतिक जीवन को ही सुख–शान्ति का मूल माना गया है वहीं यजुर्वेद के अनुसार प्रकृति और मानव एक–दूसरे पर आधारित है। अथर्ववेद में लिखा है कि जल ही जीवन का आधार है। महाभारत के अनुशासन पर्व में एक पेड़ लगाने का फल 100 पुत्रों के बराबर माना गया। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि प्रकृति के घटक ही देवता है।[2] गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी के जीवों के प्रति प्रेम एवं करूणा के भावों ने एक विशाल मानव समूह को अहिंसक एवं प्रकृति प्रेमी बना दिया।

आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व सौराष्ट्र में सुवर्णसिक्ता और प्लासिनी नदियों के पानी को रोककर बांध बनाया गया।[3] इससे बाढ़ की क्रूरता भी मिट गई तथा सिंचाई व पेयजल की सुविधा भी हो गई। सम्राट अशोक ने जनकल्याण में हजारों पेड़ लगवाये व साथ ही अपने सातवें स्तम्भ लेख में प्रजा को पेड़ों की रक्षा के लिए प्रेरित किया।[4] अशोक महान ने अपनी तलवार को सदा के लिए म्यान में रखकर अहिंसा और सभी जीवों के प्रति दया का सन्देश दिया।

गुप्तकालीन विद्वान कालिदास ने तो अपने नाटकों में प्रकृति को सच्चे अर्थों में मानव की सहचरी ही बना दिया था। प्राचीन काल में हमारे ऋषियों व मनीषियों ने पर्यावरण के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए ही कहा था कि प्रकृति हमारी माता है। मध्यकाल में सुल्तान फीरोज तुगलक ने नहरें बनवाई और बहुत सारे बाग लगवाए[5] तो शेरशाह सूरी ने ग्रांड ट्रंक रोड के दोनों और छायादार वृक्ष लगवाए।[6] मध्यकाल के सभी शासकों ने पूरे भारत में हजारों जल स्रोत, बाँध, झीलें, बावड़ियां, तालाब, कुँए और नहरें बनवाई। अंग्रेजी काल में धन्नासेठ भी इसमें पीछे नहीं रहे। आजादी तक समाज का प्रत्येक वर्ग पर्यावरण हितैषी था।

याद करें, मारवाड़ का खेजड़ली गाँव! खेजड़ली में संवत् 1787 की भादवा सुदी की दशमी को खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा के लिए विश्नोई जाति के 363 लोगों की कुर्बानी की गौरवगाथा सदा अमर रहेगी। अमृतादेवी और उसकी दो पुत्रियाँ वृक्षों की रक्षा के लिए उनके तनों से चिपक गई। राजा के सैनिकों ने उन्हें भी काट डाला। इतिहास के पन्नों में जीवित ये महान लोग सन्त जाम्भो जी के अनुयायी थे[7], जिन्होंने आज से 5 शताब्दी पूर्व वृक्षों की रक्षा और जीवों के प्रति दया का सन्देश दिया था।[8] राजस्थान में विश्नोई जाति के लोग अपने गुरू जम्भेश्वर के ये शब्द सदैव याद रखते हैं कि–

सिर साटै रूंख रहे,
तो सस्तो ही जाण।[9]

डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया के कथनानुसार पेड़ों की रक्षार्थ आत्मोसर्ग का ऐसा सामूहिक स्वैच्छिक अनुष्ठान विश्व में अनूठा और अद्वितीय है। वर्तमान में ऐसी ही सामाजिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

परन्तु बड़े खेद का विषय है कि धरती व उसके जीवन को बचाने के लिए दुनिया के शिखर पुरुष तुच्छ स्वार्थों के ऊपर नहीं उठ नहीं रहे हैं तथा अपने राष्ट्रों के विकास को और अधिक आयाम देने में लगे हुए हैं। इन्हें कितना विकास चाहिये, वे स्वयं भी नही जानते। शायद वे भूल रहे है कि विकास और विनाष सहगामी होते है। फिर यह कैसा विकास है ? किसके लिए है ? कौन बचेगा ? और कितने दिन ? अपने एसी कोकून में कब तक प्रदूषण व तपन से राहत पा सकेंगे व कब तक मिनरल वाटर से हलक तर करते रहेंगे...।

अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर चाहे कोई सार्थक प्रयास हो या ना हो, हम सबको वो सब करना होगा जो पर्यावरण के लिए लाभदायक है। सरकारी नीतियों, कानूनों व किसी बड़े समूह के प्रयासों के इन्तजार का समय समाप्त हो चुका है। यदि हम अपनी आदतों में थोड़ा सा परिवर्तन भी कर लेते हैं तो बहुत सारे कार्य ऐसे हैं जो पर्यावरण के लिए संजीवनी सिद्ध होंगे। इसमें हमें कोई भी तकलीफ नहीं होगी। हम सभी व्यक्तिगत स्तर पर बिजली, पानी व पेट्रोलियम पदार्थों की बचत कर सकते है। इन तीनों की उपलब्धता भी कम है, कीमती भी है और इनकी बचत से देश का भविष्य भी जुड़ा है। इनका दुरूपयोग बन्द हो जायेगा तो घर के बजट से राष्ट्र के बजट तक इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

मितव्ययता को कभी एक गुण के रूप मान्यता प्राप्त थी, आज यह दुर्गुण माना जाता है। पिछड़ेपन का प्रतीक हैं ! जो जितना बड़ा उपभोक्ता है वो उतना ही आधुनिक है वर्ना अशिष्ट, असभ्य, असामाजिक व आदिम! हमें अपनी क्रय–प्रवृति को सीमित करना होगा। हमारी काफी खरीददारी अनावश्यक होती है। प्लास्टिक की थैलियां, पाऊच संस्कृति व बारूद, पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है। इनके बिना हमारा कोई कार्य अवरूद्ध होने वाला नहीं है। कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से सब परिचित हैं, इन्हें भी क्रमशः कम किया जा सकता है। मोबाईल, लैपटाप, कम्प्यूटर, टीवी, फ्रिज, लाईट,

पंखे, कूलर, एसी, गीजर, निजी वाहन, प्रेशर हार्न, लाऊड स्पीकर व अन्य यन्त्रों का प्रयोग नियन्त्रित किया जा सकता है। स्वास्थ्य व पर्यावरण की दृष्टि से स्वयं को यन्त्रवत होने से बचाना होगा व पुनः प्रकृति के करीब जाना होगा।

आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि नई पीढ़ी को मालूम ही नहीं है कि सर्दी में सूरज की धूप व गर्मी में पेड़ की छाया में कितना सुकून है। गर्मी में रात को भरे हुए घड़े का पानी को पीने से लगता है जैसे तो पानी में रात की चांदनी की सारी शीतलता समा गई हो। कोल्ड ड्रिंक पीने वाले आधुनिक लोग कैसे जान सकेंगे, मिट्टी के बर्तनों में तैयार दही व छाछ से मिलने वाली तृप्ति के बारे में...। इस आधुनिक पीढ़ी ने तो खेत–खलिहान, बाग–बगीचे, ताल–तलैया, झरने–नदियां, मेढ़कों की टरटराहट, बरसात में धरती से निकलने वाली लाल मखमली तीज, रात को चमकने वाले जुगनू, चिड़ियों का चहकना, कोयल की कूक, इन्द्र धनुष व प्रकृति के अन्य अद्भुत रूप पुस्तकों मोबाईल, लैपटाप या टीवी में ही देखे होंगे। इन्होंने तो कभी खुला आकाश भी शायद ही देखा हो !

निष्कर्ष

अन्त में महात्मा गांधी का सुप्रसिद्ध कथन– प्रकृति हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लालच की नहीं। गांधी जी का यह वाक्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अभी भी हम सम्भल जाए तो बहुत कुछ बचाया जा सकता है। सभी को अपनी तमाम आवश्यकताओं को क्रमशः कम करना होगा। हमें प्रकृति की महिमा व उसकी विवशता के बारे में चेतना जागृत करनी होगी। अपने परिवार व परिचित जनों में जल व पर्यावरण संरक्षण की चर्चा कर सम्भव प्रयासों को अमल में लाना होगा। यह सभी का दायित्व है। यदि हम अपनी जीवन शैली में थोड़ा सा परिवर्तन भी कर लें तो यह स्वयं के बच्चों पर एक उपकार होगा।

अभी नहीं तो कभी नहीं

सन्दर्भ सूची

1. *द्विवेदी, अंशुमान – हड़प्पा सभ्यता एवं संस्कृति, पृष्ठ संख्या 48*
2. *श्रीमद्भगवद्गीता – 10/26*
3. *डॉ. राजबली पाण्डेय –प्राचीन भारत, पृष्ठ संख्या 205*
4. *पांथरी, भगवती प्रसाद – अशोक, पृष्ठ संख्या 186*
5. *चन्द्र, सतीश – मध्यकालीन भारत (राजनीति, समाज और संस्कृति) पृष्ठ संख्या 113*
6. *चन्द्र, सतीश – मध्यकालीन भारत (राजनीति, समाज और संस्कृति) पृष्ठ संख्या 216*
7. *राठी, महेन्द्र सिंह – पर्यावरण प्रेमी खन्नूराम विश्नोई, भूमिका*
8. *मोहम्मद, ईद–राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ संख्या 67*
9. *विश्नोई, बाबूलाल जालोर –विश्नोई गौरव दर्पण, पृष्ठ संख्या 12*